केला

मिट्टी एवं जलवायु

मिट्टी

सफल खेती के लिए मिट्टी की उर्वरता बहुत ही महत्वापूर्ण है, क्योंदकि केला एक बड़ा प्रोत्साहिक है। केला कुछ फलों में से एक है जिसमें प्रतिबंधित जड़ क्षेत्र है। इसलिए केले हेतु मिट्टी का चयन करने में गहराई और जल निकासी दो सबसे महत्व पूर्ण धटक हैं। केले के लिए उपयुक्तह मिट्टी 0.5 1 m गहरी, उपजाऊ, नमी धारण सूखा , ऑगेनिक पदार्थ की प्रचुरता सहित होनी चाहिए। पीएच की सीमा 6.5 - 7.5 होनी चाहिए। केले की खेती के लिए जलोढ़ और ज्वालामुखी मिट्टी सबसे अच्छीा है। भारत में केला मिट्टी की विभिन्नक किस्मोंऔ पर उगाया जाता है जैसे कावेरी डेल्टा के भारी क्ले्व मिट्टी, गणजैटिक डेल्टा की एलयूवायल मिट्टी , महाराष्ट्रम मं ब्लैउक लोम़ कोस्टील सैन्डीा लोमस और केरल की पहाड़ी इलाकों की लैटरिटिक मिट्टी। केले की अच्छीट फसल उगाने के लिए ये क्षेत्र प्रसिद्ध है।

जलवायु

केले के लिए अनिवार्य रूप से गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। हालांकि, यह समुद्री तल से 1200 मीटर की ऊंचाई तक उगाया जा सकता है। इसकी 10 डिग्री सेल्सियस और 40 डिग्री सेल्सियस उच्च। आर्द्रता के तापमान रेंज में खेती की जा सकती है लेकिन इसका विकास 20 डिग्री सेल्सियस पर मंद हो जाता है और 35 डिग्री सेल्सियस से ज्याखदा होने पर कम हो जाता है। एक विशेष अवधि के लिए जब तापमान 24 डिग्री सेल्सियस से ऊपर हो जाता है , पैदावार अधिक होती है। ठण्डी जलवायु मं़ फसल को पकने में अधिक समय लगता है। सक्रिय विकास स्टेपज के दौराऩ कम तापमान और आर्द्रता वाले पौधें विकास और पैदावार को कम दिखाते हैं। गर्म महीनों के दौरान , तेजी से चलने वाली गर्म हवाएं पत्तियों को सूखा देती है और टुक्डो कर देती है। इसके लिए औसतन हवा की जरूरत है। साल भर में 1700 मिलीमीटर बारिश ने इसकी संतोषजनक वृद्धि को अस्त व्यैस्तऔ कर दिया था। पानी का ठहराव हानिकारक है तथा पनामा विल्टव जैसी बिमारियों को पैदा कर सकती है।